

श्री गणेशायः नमः

जय मां छिन्नमस्तिका

माता चिन्तपूरणी चालीसा

माता जी के चालीसा का नियमित पाठ सच्चे मन से करने से जीवन में कभी भी दुख नहीं मिलता। चिन्ता से मुक्ति, मन को शान्ति व हर कार्य में सफलता मिलती है। नियम से पाठ करने पर भक्त महामाई का आशीर्वाद प्राप्त करता है

श्री गणेशायः नमः
जय मां छिन्नमस्तिका
जय मां चिन्तपूरणी चालीसा

मूल-मंत्र

“ओइम ऐं ह्रीं क्लीं श्री चामुण्डाय विच्चैः”

चित में वसो चिन्तपूरणी,
छिन्न मस्तिका मात ११।
सात बहन की लाडली,
हो जग में विख्यात १२।

2

माईदास पर की कृपा,

रूप दिखाया श्याम १३।

सबकी हो वरदायनी,

शक्ति तुम्हें प्रणाम १४।

छिन्नमस्तिका मात भवानी,

कलिकाल में शुभ कल्याणी १५।

3

सती आपको अंश दिया है,
चिन्तपूरणी नाम किया है १६।

चरणों की है लीला न्यारी,
चरण को पूजे हर नर- नारी १७।

देवी देवता हैं नतमस्तक,
चैन न पाये भजे न जब तक १८।

4

शान्त रूप सदा मुस्काता,
जिसे देख आनन्द आता १९।

एक ओर कालेश्वर साजे,
दूसरी ओर शिवबाड़ी विराजे १९०।

तीसरी ओर नारायण देव
चौथी ओर मचकूंद महादेव १९१।

5

लक्ष्मी नारायण संग विराजे,
दस अवतार उन्हीं में साजे ११२।

तीनों द्वार भवन के अन्दर,
बैठे ब्रह्मा, बिष्णु व शंकर ११३।

काली, लक्ष्मी, सरस्वती मां,
सत, रज, तम से व्याप्त हुई मां ११४।

6

हनुमान योद्धा बलकारी,
मार रहे भैरव किलकारी ११५।

चौंसठ योगिनी मंगल गावें,
मर्दंग छैने महंत बजावे ११६।

भवन के नीचे बाबड़ी सुन्दर,
जिसमें जल बहता है झर-झर ११७।

7

सन्त आरती करें तुम्हारी

तुम्हें पूजते हैं नर नारी

११८।

पास है जिसके बाग निराला,

जहां है पुष्पों की वनमाला

११९।

कंठ आपके माला विराजे,

सुहा- सुहा चोला अंग साजे

१२०।

8

सिंह यहां संध्या को आता,

छिन्नमस्तिका शीश नवाता

१२१।

निकट आपके है गुरुद्वारा,

जो है गुरु गोविन्द का प्यारा

१२२।

रणजीत सिंह महाराज बनाया,

तुम्हें स्वर्ण का छत्र चढ़ाया

१२३।

9

भाव तुम्ही से भक्ति पाया,
पटियाला मन्दिर बनवाया १२४।

माईदास पर कृपा करके,
आई होशियारपुर (ऊना) विचर के १२५।

अठूर क्षेत्र मुगलों ने घेरा,
पिता माईदास ने टेरा १२६।

10

अम्ब क्षेत्र के पास में आये,
दो पुत्र कृपा से पाये १२७।

वंश माई ने फिर पुजवाया,
माईदास को भक्त बनवाया १२८।

सौ घर उसके हैं अपनाये,
सेवारत हैं जो हर्षाये १२९।

11

तीन आरती है मंगलमय,
प्रातः, मध्य और संध्यामय ॥३०॥

असोज चैत्र मेला लगता,
पर सावन में आनन्द भरता ॥३१॥

पान ध्वजा- नारियल चढ़ाऊँ
हलवा, चना का भोग लगाऊँ ॥३२॥

12

छत्र व चुन्नी शीश चढ़ाऊँ,
माला लेकर तुम्हें ध्याऊँ ॥३३॥

मुझको मात विपद ने घेरा,
जय मां जय मां आसरा तेरा ॥३४॥

ज्वाला से तुम तेज हो पाती,
नगरकोट की छवि है आती ॥३५॥

13

नयना देवी तुम्हें देखकर
मुस्काती है मैया तुम पर

१३६।

अभिलाषा मां पूरन कर दो,
हे चिन्तपूरणी मां झोली भर दो १३७।
ममता वाली पलक दिखा दो,
काम, क्रोध, मद, लोभ हटा दो १३८।

14

सुख दुःख तो जीवन में आते,
तेरी दया से दुःख मिट जाते १३९।

चिन्तपूरणी चिन्ता हरणी,
भय नाशक हो तुम भय हरणी १४०।

हर बाधा को आप ही टालो,
इस बालक को आप संभालों १४१।

15

तुम्हारा आशीर्वाद मिले जब,
सुख की कलियां खिलें तब ॥४२॥

कहां तक तुम्हारी महिमा गाऊँ,
द्वार खड़ा हो विनय सुनाऊँ ॥४३॥

चिन्तपूरणी मां मुझे अपनाओ,
'सतीश' को भव पार लगाओ ।

दोहा

चरण आपके छू रहा हूँ, चिन्तपूरणी मात ।
लीला अपरंपार है, हो जग में विख्यात ॥